Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-04, Issue-I, August 2013

दुष्यंत कुमार की रचनाओं में समसामायिक जीवन की त्रासदी
दुष्यंत कुमार की रचनाओं में यथार्थ की अभिव्यक्ति

डॉ. ओम पकाश दुबे प्रवक्ता–नेवढ़िया इंटर कॉलेज, जौनपुर

दुष्यंत कुमार एक संवेदनशील, संघर्षशील व्यक्ति, युगदृष्टा, सच्चे जननेता, कुशलवक्ता एवं बहुमुखी प्रतिभा संपन्न सफल रचनाकार थे। उनकी लेखनी से साहित्य की कोई भी विधा अछूती नहीं रही। उनकी सृजन–संवेदना व्यष्टि से समिष्टि तक विस्तार पाती है। उनकी रचनाओं में व्यक्त युगीन परिवेश की पृष्ठभूमि में गहन अनुभूति, चिंतन, व्यापक कल्पना और सूक्ष्म निरीक्षण है। उनके कविकर्म का आधार जीवन यथार्थ और जनजीवन से संपृक्ति है। दुष्यंत कुमार ने जीवन के प्रत्येक पहलू से काव्य विषयी चुने हैं। विषय ऐसे हैं, जो अध्येताओं के हृदय–तारों को झकझोर जाते हैं। सही अर्थों में स्वर्गीय दुष्यंत जी आधुनिक युगबोध के कवि हैं। उनकी दृष्टि में जीवन के लिए दर्शन जैसी चीज बेमानी है। आदमी वर्तमान से कटकर नहीं जी सकता और यदि जीता भी है तो वह जीता नहीं पलायन करता है, क्योंकि जिन्दगी का नाम तो संघर्ष है। अतएव आदमी को चाहिए कि वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में यथार्थ जीवन जिए, प्रतिकूलताओं से संघर्ष करे, कर्मवादी बने, आदर्श के जाल से और परंपराओं पर आश्रित जिन्दगी से विराम ले।

दुष्यंत कुमार की रचनाओं में अनावश्यक विषयों को कहीं स्थान नहीं मिला है। वे सदैव काल्पनिकता और कृत्रिमता से मुक्त रहे। काव्य के प्रति उनकी दृष्टि सतही धरातल को स्पर्श करने के बजाय तलस्पर्शनी रही है। जिन्दगी को गहराई से समझा है। संघर्ष को प्रधानता दो है। आदर्श को खोखला मानकर जीवन के लिए यथार्थ दर्शन दिया है। दुखियों, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। राष्ट्र नियामकों की स्वार्थपरता पर मार्मिक व्यंग किए हैं तथा देश के भविष्य पर चिंता व्यक्त की है। उनके काव्य में समसामयिक जीवन से संबंधित मुद्दों की संक्षिप्त विवेचना निम्नलिखित है।

लोकतंत्र : – दुष्यंत को यथार्थ और मानवता का कवि कहा गया है। स्वतंत्रता आंदोलन की लंबी और त्यागपूर्ण लड़ाई के पश्चात हमें आजादी मिली। देश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रजातंत्र की स्थापना हुई। देश के प्रत्येक नागरिक के मन में सुख–शान्ति–समृद्धि और अपने अधिकार मिलने की आशा जगी। जनंतत्र के माध्यम से घर–घर में विकास की किरणें पहुँचाने के वादे हुए, लेकिन सब खोखले साबित हुए, स्थिति कुछ ऐसी बनी–

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।[१]

जन सेवा के नाम पर जनता से मतदान माँगने वाला नेतृत्व अपनी मनमानी करता रहा, बिजली, पानी, सड़क, कृषि–विकास के नाम पर जनता को झूठे प्रलोभन देता रहा। जिस नेतृत्व पर विश्वास कर जनता निश्चिंत रही, उसी आधार वृक्ष ने बेकारी, भुखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार, महँगाई, अशिक्षा जैसी समस्याएँ खड़ी

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-04, Issue-I, August 2013

कर दी। स्वावलंबी जनता की अपेक्षा उनमें परावलंबन, असहायता, निराशा, वेदना चरम पर दिख़ने लगी। इस स्थिति पर दुष्यंत लिखते है –

यहाँ दरख़्तों के साए में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।[२]

***

जनता की सेवा करने के भूखे
सारे दल भेड़ियों से टूटते हैं।[३]

चुनाव जीतने के बाद विकास के बड़े–बड़े वादे करने वाले नेतागण स्वार्थ–सिद्ध करने में लिप्त हो जाते हैं, इसलिए राजनीतिज्ञों की कूटनीतिक चाल से बचाने के लिए शायर दुष्यंत जनता से कहते हैं :–

रहनुमाओं की अदाओं पे फिदा है दुनिया
इसकी बहकती हुई दुनिया को सँभालो यारों।

लोकतंत्रीय व्यवस्था में आम जनता दो जून की रोटी के लिए संघर्षरत है लेकिन उसे रोटी के बजाय सब्र करके ही अपनी तृष्णा को शांत करना पड़ता है। नेताओं की लापरवाह प्रवृत्ति पर दुष्यंत व्यंग्य करते हुए कहते हैं : –

भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है जेरे बहस ये मुद्दा।[४]

यदि जीवन का सच्चा सुख उपलब्ध करना है, तो राजनैतिक झाँसों से सुदूर यथार्थ की भूमि पर कर्म का योग करना होगा। दुष्यंत जी ने इस तथ्य को कितनी सहजता, सरलता और सशक्तता से प्रस्तुत किया है :

आज सड़कों पर लिखे हैं सैकड़ों नारे न देख,
घर का अँधेरा देख तू, आकाश के तारे न देख।****
दिल को बहला ले, इजाजत है, मगर इतना न उड़
रोज सपने देख, लेकिन इस कदर प्यारे न देख।[५]

भ्रष्टाचार भी लोकतंत्र की जटिल और ज्वलंत समस्या है, दुष्यंत जी ने इसके स्वरूप को सर्वहत के संवादों से भली भांति उजागर किया है : –

ऐसे लोग अहिंसक कहाते हैं ।
मांस नहीं खाते
मुद्रा खाते हैं।[६]

'एक कंठ विषपायी' काव्य नाटक में, 'सर्वहत' नामक जन प्रतिनिधि के माध्यम से प्रजातंत्र में जनता की अनिश्चित, डावांडोल स्थिति को उभारा गया है। दुष्यंत के 'सर्वहत' का यह कथन जन सामान्य की स्थिति का यथार्थबोध कराता है –

---- शायद मैं राजा हूँ
---- शायद मैं शासन का प्रतिनिधि हूँ

www.gbrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-04, Issue-I, August 2013

---- या मैं इस राज्य की प्रजा हूँ
---- शायद मैं कुछ भी नहीं हूँ और सबकुछ हूँ।[७]

दुष्यंत की काव्य रचना युग बोध की कृति है। प्रजातांत्रिक विद्रूपताओं, युद्ध की समस्या, भूख की समस्या, पूंजीपतियों व नेताओं के आचार-व्यवहार, जनता के जीवन की अनिश्चितता आदि का निरूपण इनके साहित्य में हुआ है ।

आम आदमी का करूण क्रंदन :

दुष्यंत कुमार की संपूर्ण काव्य-यात्रा में जिस करूण क्रंदन की अभिव्यक्ति हुई है वह प्रेम जनित न होकर, सामाजिक समस्याओं से उद्‌भूत है, वह दर्द जो आम आदमी के अभावों और दबावों के दर्द से पैदा हुआ है ।

रोज जब रात को बारह का गजर होता है,
यातनाओं के अंधेरे में सफर होता है।[८]

दुष्यंत ने दर्द को छिपाया नहीं है क्योंकि वह उन्हें ज्योति देता है और देता है संघर्ष करने की शक्ति। उन्हें दर्द ने लक्ष्य तक पहुँचाया, इसलिए उसका मूल्य है -

ये सच है कि पाँवों ने बहुत कष्ट उठाए,
पर किसी तरह से राहों पे तो आए।[९]

सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह : -

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात भारत में रामराज्य स्थापित करने के सपने संजोए जाने लगे थे। एक ऐसा देश जिसमें जाति, वर्ग आदि के स्तर पर कहीं कोई विषमता न हो, जिसमें सब समान हों, पारस्परिक सद्‌भावना हो, भाइ-चारे व विश्वबंधुत्व की भावना हो, लेकिन रामराज्य का वह स्वप्न रेत की दीवार की तरह धाराशायी हो गया। अनेक वर्गों में विभक्त इस समाज में ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, सामान्य-विशिष्ट, पूँजीपति-श्रमिक के बीच ऐसी गहरी खाई बन गई है, जिसे पाटना अब असंभव-सा प्रतोत होता है। नफरत और घृणा का विस्तार तेजी से बढ़ता जा रहा है -

नफरत और भेदभाव
केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं रह गया है अब।[१०]

परंतु इस तरह का भेदभाव लोकतंत्र की मर्यादा भंग करता है, यह किसी के लिए हितकर नहीं है। वर्ग-वैषम्य से ग्रस्त सर्व-सामान्य के प्रतिनिधि 'सर्वहत' का यह दृष्टिकोण इस भेदभाव को और स्पष्ट कर देता है :-

''बतलाओ -
मुझमें या शिव में क्या अंतर है ?
यही न कि मैं तो सर्वहत हूँ
----- साधारण -----
और वो विशिष्ट देवता है, शिव शंकर है ।
किंतु प्यास दोनों की एक-सी है।[११]

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-04, Issue-I, August 2013

अनेक वर्गों में विभाजित समाज के हर वर्ग की भूख दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। कोई अधिकार लिप्सा का भूखा है तो कोई प्रतिष्ठा का, कोई आदर्शों का तो कोई धन का भूखा है। परंतु पेट की भूख सबसे बड़ी है – सर्वहत की ह, अभावों के पाटों में पिसने वाले वर्ग की है, जिसे मिटाना अति आवश्यक है।

आज हर एक वर्ग अपनी–अपनी विभुक्षा को शांत करने में लगा है पूँजीपति शोषण करने में लिप्त हैं। ऐसी स्थिति में समाजवादी समाज–व्यवस्था कैसे सफल हो सकती है। कवि दुष्यंत जी ने पूँजीवाद के विरूद्ध विद्रोह के स्वर भी मुखरित किए हैं।

अतिथि भवन है
राजमार्ग हैं
इन सबको खालो
इन सब से भूख मिट जाती हैं।[१२]

दुष्यंत कुमार ने विरोध को इसलिए आवश्यक माना है क्योंकि परिवर्तन के लिए और कोई रास्ता नहीं है ।

मूल्यगत विघटन : – आज व्यक्ति मूल्य परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है क्योंकि पश्चिमी सभ्यता–संस्कृति और अस्तित्ववाद जैसी विचारधाराएँ उसे इस ओर इंगित कर रही हैं। व्यक्ति बिना विवेक के पुराने को त्याग कर नए के प्रति आकर्षित हो रहा है। पश्चिम के संपर्क ने राष्ट्र के जनजीवन को अनेक दिशाओं में जहाँ आगे बढ़ाया है, वहाँ जीवन की ऊपरी तड़क–भड़क और चकाचौंध ने सभ्यता, संस्कृति, नैतिक, सामाजिक सभी तरह के मूल्यों को विडम्बना की दहलीज तक भी पहुँचा दिया है। नई–सभ्यता–संस्कृति की मूल्यहीनता व विकृति को कवि ने इन दो पंक्तियों में कितनी सफलता से व्यक्त किया है –

अब नई तहजीब के पेशे–नजर हम
आदमी को भूनकर खाने लगे हैं।[१३] ***
बच्चों को तंग हो गए हैं वे वस्त्र
जो संस्कृतियाँ बाँटती हैं।

***

लोगों को तंग लग रही हैं पोशाकें
जो संस्कृतियाँ बाँटती है।[१४]

दुष्यंत जी ने इस मूल्यगत परिवर्तन को अपने काव्य का विषय बनाया है। मूल्यों का यह विघटन शहरी और ग्रामीण दोनों स्तरों पर हुआ है।

परंपराओं से मुक्ति की छटपटाहट : – वर्तमान सभ्यता और ज्ञान–विज्ञान के इस युग में व्यक्ति का अधिकांश जीवन परंपराओं में जकडा हुआ है । उसमें परंपराओं से मुक्ति की छटपटाहट है, युवा पीढ़ी नई राहें तलाश रही हैं। दुष्यंत जी ने 'एक कंठ विषपायी' काव्य–नाटक में परंपराओं के मोह और द्रोह के विषय को

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-04, Issue-I, August 2013

मुख्य रूप से उठाया है। शंकर परंपराभंजक और परंपरासमर्थक हैं। शंकर की तरह आज की युवा पीढ़ी परंपराओं की जर्जर दीवारों से व्यथित है, जिन्हें बुर्जुआ-पीढ़ी निरंतर पुष्ट करती रहती है- फिर भी यह -

''दीवार भला कब तक रह पायेगो रक्षित
यह पानी नभ से नहीं धरा से आता है।[१५]

दुष्यंत कुमार ने परंपराओं की दीवारों को तोड़कर फेंकने की युगानुकूल आवश्यकता को अपने काव्य का विषय बनाया है।

मानव जीवन की विशद् व्याख्या : - दुष्यंत कुमार ने मानव जीवन के विविध विषयों का अपने साहित्य में विवेचन किया है। आज जिस अनुपात में मानव-मन की महत्त्वाकांक्षाएँ उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही हैं उस अनुपात में उनकी योग्यताएँ नहीं बढ़ रही हैं। जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति नकारात्मक, लक्ष्यहीन, दिशाहारा, विवशता, शत्रुता और तमाम कुंठाओं से ग्रसित होता जा रहा है। ''पर एक सीमा होती है, जहाँ तक व्यक्ति विवशता, लक्ष्यहीनता तथा अतृप्त इच्छाओं, कुंठाओं को सहन करता हैं किंतु जब बात सीमाओं से परे जाने लगती हैं तो अवसर पाने ही कुंठाएँ क्रांति बन जाती है।''[१६] दुष्यंत कुमार लिखते हैं -''जिंदगी को उसी रूप में जीना चाहिए, जिस रूप में वह मिली है।[१७]

दुष्यंत का मानना है कि जीवन में कभी आत्म विश्वास, संकल्प, आशा और सत्य का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। आशा-निराशा, सुख-दुख जीवन के दो पहलू हैं विपरीत परिस्थिति में नकारात्मक ऊर्जा हमें अपनी ओर और आकर्षित करती है परंतु विषम परिस्थिति का सामना करते हुए करते हुए, संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना ही जीवन का पहला धर्म है। तभी तो वे अपनी भावी पीढ़ी से कहते हैं : -

उदास बालक-बालिकाओं सुनो ।
समय के सामने सीना तानो।[१८] ***
ईश्वर की शपथ इस अंधेरे में उसी सूरज के दर्शन के लिए
जी रहा हूँ मैं कल से अब तक।[१९]

इस प्रकार दुष्यंत कुमार ने अपनी कविताओं में समसामयिक जीवन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

संदर्भ :-

१- साए में धूप पृ. १३, द्वितीय सं., राधाकृष्ण पकाशन
२- साए में धूप पृ. १३, द्वितीय सं., राधाकृष्ण पकाशन
३- जलते हुए वन का वसंत, दुष्यंत कु. पृष्ठ ४४, प्रथम संस्करण, अनादि पकाशन ।
४- साए में धूप, पृष्ठ-२१, द्वितीय सं. राधाकृष्ण पकाशन ।
५- साए में धूप, पृष्ठ-३३, द्वितीय सं. राधाकृष्ण पकाशन ।
६- एक कंठ विषपायी पृ.६५-दुष्यंत कु.
७- एक कंठ विषपायी पृ.६५-दुष्यंत कु.

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-04, Issue-I, August 2013

८– बाए में धूप, दुष्यंत कुमार पृष्ठ. ४७ द्वितीय सं. राधाकृष्ण

९– बाए में धूप, दुष्यंत कुमार पृष्ठ. ४२ द्वितीय सं. राधाकृष्ण

१०– सूर्य का स्वागत, दू.कु.प्र.–३८

११– एक कं. विषपायी, दु.कु., पृ. ११५

१२– एक कंठ वि. दु.कु., पृष्ठ ५२

१३– साए में धूप दु.कु.पृ.१४

१४– जलते हुए वन का वसंत, दु.कु.प.९

१५– सूर्य का स्वागत दु.कु, पृष्ठ–१६, प्रथ. सं., राजकमल

१६– आवाज के घेरे, दु.कु., पृष्ठ–३१, प्र.सं., राजकमल पकाशन

१७ आवाज के घेरे, दु.कु., पृष्ठ–२६

१८– सूर्य का स्वागत, दु.कु. पृष्ठ–७४, प्र.सं. राजकमल पकाशन

www.ghrws.in